INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

जैन दर्शन में निहित विद्यार्थी जीवन मूल्य

इतिका जैन
शोधार्थी
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड) विश्वविधालय उदयपुर

प्रो. अमी राठौर
शोध निर्देशक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड) विश्वविधालय उदयपुर

सार Abstract

The purpose of the present research paper is to analyse the ethical, spiritual, and practical life values embedded in Jain philosophy that play a significant role in the holistic development of students. The value framework of Jain philosophy is grounded in principles such as non-violence, truth, self-restraint, non-possessiveness, and self-discipline, which extend education beyond mere acquisition of knowledge and integrate it with character formation and life skills. In the contemporary context, where the education system is increasingly influenced by competition, material success, and an excessive emphasis on academic scores, Jain values offer meaningful guidance to students by fostering mental balance, moral integrity, and social responsibility. The study adopts a philosophical and analytical approach and highlights the relevance of Jain philosophy within the framework of contemporary education.

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य जैन दर्शन में निहित उन नैतिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक जीवन मूल्यों का विश्लेषण करना है, जो विद्यार्थी जीवन के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जैन दर्शन की मूल्यदृष्टि अहिंसा, सत्य, संयम, अपरिग्रह तथा आत्मानुशासन जैसे सिद्धांतों पर आधारित है, जो शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न रखकर, उसे चरित्र निर्माण एवं जीवन-संस्कार की प्रक्रिया से जोड़ते हैं। वर्तमान समय में, जब शिक्षा व्यवस्था प्रतियोगिता, भौतिक सफलता और अंकों की प्रधानता से प्रभावित हो रही है, तब जैन दर्शन के मूल्य विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन, नैतिक दृढ़ता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह अध्ययन दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा समकालीन शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में जैन दर्शन की प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्द (Keywords):

जैन दर्शन, विद्यार्थी जीवन, जीवन मूल्य, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक विकास, अहिंसा

प्रस्तावना:

क्षयोपशमसम्पन्नं, सच्चित्तं ज्ञानदर्शनम्।

चारित्रं यत्र तत्तत्वं, मोक्षमार्गस्य कारणम्॥1

(जहाँ ज्ञान, दर्शन और चारित्र का समन्वय होता है और आत्मा को पाप कर्मों से मुक्त कर धर्म का पालन किया जाता है, वही सच्चा मोक्षमार्ग है।)

जैन धर्म भारत के सबसे प्राचीन और समृद्ध धार्मिक और दार्शनिक परंपराओं में से एक है, जिसकी नींव अहिंसा (अहिंसा), सत्य (सत्य), अपरिग्रह (अपरिग्रह), और संयम (संयम) जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों पर आधारित है। ये चारों मूल्य न केवल जैन धर्म के अनुयायियों के लिए एक आदर्श जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करते हैं, बल्कि समग्र रूप से मानवीय समाज के कल्याण के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं। जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धांत अहिंसा है, जिसका अर्थ केवल शारीरिक हिंसा से दूर रहना नहीं है, बल्कि हमारे विचारों, शब्दों, और कर्मों में भी अहिंसा का पालन करना आवश्यक है। अहिंसा का यह व्यापक दृष्टिकोण हमें हर जीव, चाहे वह मानव हो या अन्य प्राणी, के प्रति करुणा और सम्मान सिखाता है। यह सिद्धांत हमें जीवन में संयम और धैर्य बनाए रखने के लिए प्रेरित करता है और दूसरों के साथ शांति और सम्मान के साथ व्यवहार करने की दिशा में हमें अग्रसर करता है।

इसके अलावा, जैन धर्म में सत्य का विशेष स्थान है। सत्य का पालन करना केवल ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के साथ जीवन जीना ही नहीं है, बल्कि यह हमारे आचरण और विचारों को भी शुद्ध और सच्चा बनाए रखने की प्रेरणा देता है। सत्यनिष्ठा हमारे जीवन के हर पहलू में पारदर्शिता और ईमानदारी की नींव बनती है, जो व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन को सुचारू और समृद्ध बनाती है। जैन दर्शन सत्य को सर्वोच्च मानता है क्योंकि यह नैतिकता और आत्म-शुद्धि की दिशा में हमारे प्रयासों को सशक्त करता है।

अपरिग्रह, जो भौतिक वस्तुओं और संपत्तियों के प्रति आसक्ति को कम करने का सिद्धांत है, जैन धर्म का एक अन्य महत्वपूर्ण मूल्य है। यह सिद्धांत हमें सिखाता है कि भौतिक वस्तुओं से परे जीवन की सादगी और संतोष में ही सच्चा सुख निहित है। आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ व्यक्ति वस्तुओं के प्रति अत्यधिक आसक्त हो गया है, अपरिग्रह का पालन हमें सादगीपूर्ण और सार्थक जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। यह मूल्य हमें केवल उतनी ही वस्तुएं प्राप्त करने की प्रेरणा देता है जितनी जीवन के लिए आवश्यक हैं, जिससे हम मानसिक और आध्यात्मिक शांति प्राप्त कर सकें।

संयम, या आत्म-नियंत्रण, जैन धर्म का चौथा प्रमुख सिद्धांत है, जो हमारी इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रखने की क्षमता को दर्शाता है। संयम जीवन में अनुशासन, धैर्य और स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संयमित जीवन जीने से हम मानसिक संतुलन प्राप्त करते हैं और जीवन के कठिन समय में भी स्थिर रहते हैं। यह हमें जीवन के हर पहलू में आत्म-नियंत्रण और जिम्मेदारी के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है, चाहे वह व्यक्तिगत जीवन हो या सामाजिक जिम्मेदारियाँ । इन चारों सिद्धांतों का प्रभाव केवल धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी गहराई से जुड़ा हुआ है। अहिंसा और सत्य जैसे सिद्धांत छात्र जीवन में नैतिकता और अनुशासन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। छात्रों को यह सिखाया जाता है कि वे अपने सहपाठियों और शिक्षकों के साथ करुणा, सम्मान और सहयोग की भावना के साथ पेश आएं। शैक्षिक प्रतिस्पर्धा को भी अहिंसा के दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए, जहाँ प्रतिस्पर्धा स्वस्थ और नैतिक हो, और यह प्रतिस्पर्धा अन्य छात्रों को नुकसान पहुँचाने के बजाय उनके साथ सहयोग और सद्भावना को बढ़ावा दे। इस प्रकार, अहिंसा और सत्यनिष्ठा का पालन छात्रों को शैक्षिक माहौल में नैतिक रूप से मजबूत बनाता है और उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है। संयम और अपरिग्रह का महत्व भी शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रासंगिक है। संयम छात्रों को अनुशासन, आत्म-नियंत्रण, और धैर्य के साथ अपनी पढ़ाई में सफल होने की प्रेरणा देता है। यह उन्हें अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहने और किसी भी प्रकार के अवांछित विचारों और भावनाओं से दूर रहने की क्षमता प्रदान करता है। अपरिग्रह छात्रों को सिखाता है कि वे सीमित साधनों में भी संतोष प्राप्त कर सकते हैं और अनावश्यक वस्तुओं की आसक्ति से बच सकते हैं। यह सिद्धांत उन्हें दिखावे और उपभोक्तावाद के जाल से बचने और सादगीपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इससे वे आत्म-विश्वास और आत्म-संतोष के साथ जीवन जीते हैं और अनावश्यक दबाव और तनाव से मुक्त रहते हैं।

इन सभी सिद्धांतों का सम्मिलित प्रभाव छात्रों के समग्र विकास में होता है। जैन दर्शन केवल शैक्षिक सफलता पर केंद्रित नहीं है, बल्कि वह छात्रों को एक नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है। जैन धर्म के ये मूल्य छात्रों को न केवल बेहतर छात्र बनने की शिक्षा देते हैं, बल्कि उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने और उनके निर्वहन में सहायक होते हैं। यह दृष्टिकोण छात्रों को नैतिकता, सहानुभूति, और सहयोग की भावना से प्रेरित करता है, जो न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव लाता है। इस प्रकार, जैन दर्शन के चार प्रमुख सिद्धांत — अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, और संयम — न केवल आध्यात्मिक उन्नति के लिए, बल्कि छात्रों के नैतिक, मानसिक, और शैक्षिक मार्गदर्शन के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

ये सिद्धांत आज के युग में अत्यधिक प्रासंगिक हैं, जहाँ नैतिकता और मानवता के मूल्यों की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। जैन दर्शन के ये सिद्धांत छात्रों के समग्र विकास और समाज में नैतिक और जिम्मेदार नागरिकों के निर्माण के लिए एक सशक्त आधार प्रदान करते हैं।

नानं तह दंसणं च, चरित्तं तं च णिच्चयं।

एगत्तएण सम्बंधा, मोक्षमारगामिणो गुणा॥8

शिक्षा के संदर्भ में, जैन दर्शन बौद्धिक विकास के साथ-साथ नैतिक और आंतरिक विकास को भी समान रूप से महत्वपूर्ण मानता है। जैन शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि उसे नैतिक मूल्यों के साथ जोड़कर एक समग्र व्यक्तित्व का निर्माण करना है। जैन दर्शन में प्रमुख शैक्षिक और उत्तरदायित्व संबंधी मूल्य जैसे अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य और ब्रह्मचर्य विद्यार्थियों को जीवन में संतुलन, अनुशासन और समाज के प्रति जिम्मेदारी सिखाते हैं। जैन दर्शन के चार प्रमुख सिद्धांत — अहिंसा, अपरिग्रह, सत्य, और ब्रह्मचर्य — शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मूल्य प्रदान करते हैं। अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचने तक सीमित नहीं है, बल्कि विचार, वाणी और कर्म में भी अहिंसा का पालन करते हुए एक ऐसा शांतिपूर्ण वातावरण बनाने पर जोर देती है, जहाँ शिक्षक और विद्यार्थी सह-अनुभूति और सम्मान के साथ संवाद कर सकें। अपरिग्रह विद्यार्थियों को सिखाता है कि वे सीमित साधनों में संतुष्ट रहें और अनावश्यक भौतिक वस्तुओं की आसक्ति से बचें, जिससे आत्म-संयम और सादगी का विकास होता है। इसी तरह, सत्य का सिद्धांत ईमानदारी और पारदर्शिता पर जोर देता है, जिससे विद्यार्थी अपने आचरण और अध्ययन में सच्चाई और ईमानदारी का पालन करते हैं। अंततः, ब्रह्मचर्य आत्म-नियंत्रण और अनुशासन का महत्व बताता है, जो छात्रों को केंद्रित और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है, जिससे वे जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनते हैं। इन सिद्धांतों के माध्यम से जैन दर्शन शिक्षा को नैतिक और व्यावहारिक मूल्यों से परिपूर्ण करता है, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास में सहायक होते हैं। भारतीय दर्शन परंपरा का प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन को नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से उन्नत बनाना रहा है। इस परंपरा में जैन दर्शन एक ऐसी विशिष्ट धारा प्रस्तुत करता है, जो आत्मसंयम, अहिंसा और नैतिक शुद्धता को जीवन का मूल आधार मानता है। विद्यार्थी जीवन वह अवस्था है, जहाँ व्यक्ति की सोच, व्यवहार और मूल्यबोध का निर्माण होता है। इस दृष्टि से जैन दर्शन में निहित जीवन मूल्य शिक्षा के नैतिक उद्देश्य को सशक्त बनाते हैं।

1. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक सफलता पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है, जिससे नैतिक मूल्यों का पक्ष कमजोर होता जा रहा है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में तनाव, असहिष्णुता और नैतिक विचलन जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे समय में जैन दर्शन मूल्यपरक शिक्षा का एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान करता है।
2. जैन दर्शन का त्रिरत्न सिद्धांत—सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक चरित्र—
शिक्षा की समग्र अवधारणा को स्पष्ट करता है। यह सिद्धांत बताता है कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह सही दृष्टिकोण और सदाचरण से जुड़ा हो। विद्यार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह न केवल विषयगत ज्ञान अर्जित करे, बल्कि उसे नैतिक एवं व्यवहारिक जीवन में भी अपनाए। इस दृष्टि से जैन दर्शन आधुनिक Holistic Education और Value-Based Education की अवधारणाओं से पूर्णतः सामंजस्य रखता है।

3.अहिंसा जैन दर्शन का मूल और सर्वाधिक व्यापक सिद्धांत है। विद्यार्थी जीवन में अहिंसा का तात्पर्य केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और वाचिक स्तर पर भी दूसरों को आघात न पहुँचाना है। प्रतिस्पर्धा-प्रधान शैक्षिक वातावरण में अहिंसा विद्यार्थियों को सहिष्णुता, सहानुभूति और सहयोग की भावना विकसित करने में सहायता करती है।अहिंसक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को संतुलित बनाता है और उन्हें सकारात्मक संवाद तथा शांतिपूर्ण समाधान की ओर प्रेरित करता है।

4. सत्य जैन दर्शन का दूसरा प्रमुख नैतिक स्तंभ है। विद्यार्थी जीवन में सत्य का संबंध अकादमिक ईमानदारी, आत्मप्रामाणिकता और नैतिक साहस से है। परीक्षा प्रणाली, शोध-कार्य और मूल्यांकन की प्रक्रिया में सत्य का पालन विद्यार्थियों को दीर्घकालिक नैतिक सफलता प्रदान करता है।

5. संयम जैन दर्शन में आत्मविकास का अनिवार्य साधन माना गया है। विद्यार्थी जीवन में संयम का अर्थ है—समय, ऊर्जा और संसाधनों का संतुलित उपयोग। आधुनिक डिजिटल वातावरण में, जहाँ ध्यान भंग होने की संभावनाएँ अधिक हैं, संयम विद्यार्थियों को एकाग्रता और लक्ष्यबद्धता प्रदान करता है। संयम का अभ्यास विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि दोनों को सुदृढ़ करता है।

6. अपरिग्रह का सिद्धांत विद्यार्थियों को उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों से दूर रहने की प्रेरणा देता है। आवश्यकता से अधिक संग्रह और तुलना की भावना मानसिक तनाव को जन्म देती है। जैन दर्शन का अपरिग्रह सिद्धांत सादगी, संतोष और आत्मसंतुलन का मार्ग प्रशस्त करता है।

7. जैन दर्शन आत्मानुशासन और आत्मचिंतन को नैतिक विकास का मूल आधार मानता है। विद्यार्थी जीवन में आत्मचिंतन आत्ममूल्यांकन और आत्मसुधार की प्रक्रिया को सशक्त करता है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर और विवेकशील बनाता है।

8. समकालीन शिक्षा व्यवस्था को यदि नैतिक और मानवीय बनाया जाना है, तो जैन दर्शन के जीवन मूल्यों का समावेश आवश्यक है। ये मूल्य विद्यार्थियों को न केवल योग्य पेशेवर, बल्कि उत्तरदायी नागरिक भी बनाते हैं।

9. निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जैन दर्शन में निहित विद्यार्थी जीवन मूल्य आधुनिक शिक्षा की नैतिक चुनौतियों का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करते हैं। यह दर्शन शिक्षा को चरित्र निर्माण और आत्मविकास की दिशा प्रदान करता है। अतः जैन दर्शन को मूल्यपरक शिक्षा के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. उमास्वाति. तत्त्वार्थ सूत्र. अध्याय 1, सूत्र 1.1-1.3.
2. जैन धर्म. In: विकिपीडिया [Internet]. 2024 [cited 2024 Sep 27]. Available from: https://hi.wikipedia.org/wiki/जैन_धर्म
3. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 1, सूत्र 1.2.
4. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.12.
5. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 9, सूत्र 9.5.
6. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.1-7.4.
7. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 9, सूत्र 9.5-9.7; अध्याय 7, सूत्र 7.12.
8. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 1, सूत्र 1.1.
9. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.1-7.5.
10. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.5.

11. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.1-7.5; अध्याय 9, सूत्र 9.5.
12. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 5, सूत्र 5.21.
13. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 5, सूत्र 5.21-5.24.
14. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 9, सूत्र 9.6.
15. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.13.
16. उमास्वाति. *तत्त्वार्थ सूत्र.* अध्याय 7, सूत्र 7.12-7.13.
17. Gulgulia, A. (2023). *PRESERVING HERITAGE IN THE MODERN ERA: THE ROLE OF JAIN EDUCATION.* *6*(11), 5. https://isjs-newsletter.in/Newsletter/2023/November/02/Speak%20Up.pdf.
18. शर्मा डॉ देवीशंकर. (2021). जैन धर्म में निहित नैतिक मूल्य. *International Journal of Education and Science Research Review,* *8*(6), 4. https://ijesrr.org/publication/77/32.%20ijesrr%20dec%202021.pdf
19. Maes C. Jain Education in South Asia. In: Sarangapani PM, Pappu R, editors. Handbook of Education Systems in South Asia [Internet]. Singapore: Springer; 2020 [cited 2024 Sep 27]. p. 1–29. Available from: https://doi.org/10.1007/978-981-13-3309-5_7-1
20. सारस्वतपवन, & त्यागीपी.एस. (2014). जैन दर्शन में मानवाधिकार एवं विश्वशान्ति शिक्षा की संकल्पना का अध्ययन. *Golden Research Thoughts,* *IV*(VI). https://oldgrt.lbp.world/ArticleDetails.aspx?id=4823
21. Netragaonkar DYD. The Impact of Philosophy of Jainism on Various Aspects of Education. [cited 2024 Sep 27]; Available from: https://www.academia.edu/10411402/The_Impact_of_Philosophy_of_Jainism_on_Various_Aspects_of_Education
22. Tatia, N. (2010). Jain philosophy. New Delhi: Motilal Banarsidass.
23. Jain, S. (2012). Jain ethical philosophy. Varanasi: Parshvanath Vidyapeeth.
24. Sharma, R. N. (2015). Value-based education. Agra: Vinod Pustak Mandir.
25. Singh, Y. K. (2018). Philosophical foundations of education. New Delhi: APH Publishing.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.